يَٰبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٱذۡكُرُواْ نِعۡمَتِيَ ٱلَّتِيٓ أَنۡعَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ وَأَوۡفُواْ
بِعَهۡدِيٓ أُوفِ بِعَهۡدِكُمۡ وَإِيَّٰيَ فَٱرۡهَبُونِ ٤٠ وَءَامِنُواْ بِمَآ
أَنزَلۡتُ مُصَدِّقٗا لِّمَا مَعَكُمۡ وَلَا تَكُونُوٓاْ أَوَّلَ كَافِرِۭ بِهِۦۖ وَلَا
تَشۡتَرُواْ بِـَٔايَٰتِي ثَمَنٗا قَلِيلٗا وَإِيَّٰيَ فَٱتَّقُونِ ٤١ وَلَا تَلۡبِسُواْ
ٱلۡحَقَّ بِٱلۡبَٰطِلِ وَتَكۡتُمُواْ ٱلۡحَقَّ وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ٤٢ وَأَقِيمُواْ
ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱرۡكَعُواْ مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ ٤٣ ۞ أَتَأۡمُرُونَ
ٱلنَّاسَ بِٱلۡبِرِّ وَتَنسَوۡنَ أَنفُسَكُمۡ وَأَنتُمۡ تَتۡلُونَ ٱلۡكِتَٰبَۚ
أَفَلَا تَعۡقِلُونَ ٤٤ وَٱسۡتَعِينُواْ بِٱلصَّبۡرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ
إِلَّا عَلَى ٱلۡخَٰشِعِينَ ٤٥ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُواْ رَبِّهِمۡ
وَأَنَّهُمۡ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ ٤٦

Theme	
Need of Allah's revelations for guidance. Allah's covenants with the Children of Israel. Do you advise others and forget yourselves? Allah's help comes with patience and Salah.	हिदायत के लिए अल्लाह की वह्य की ज़रूरत। बनी इसराईल के साथ अल्लाह के अहद। क्या तुम दूसरों को नसीहत करते हो और ख़ुद को भूल जाते हो? अल्लाह की मदद सब्र और सलात के साथ आती है।
Tarjumani	
O children of Israel! Remember My favors which I bestowed upon you; fulfill your covenant (firm commitment)	ऐ बनी-इसराईल, ज़रा ख़याल करो मेरी उस नेमत का जो मैंने तुमको अता की थी	मेरे साथ तुम्हारा जो अहद था उसे तुम पूरा करो तो मेरा

with Me and I will fulfill My covenant with you, and fear none but Me. Believe in My revelations, which are confirming your scriptures; do not be the first one to deny My revelations, and do not sell them for a petty price, fear Me and Me Alone. Do not mix the Truth with falsehood, or knowingly conceal the truth. Establish Salah (prayers); give Zakah (charity); and bow down with those who bow down in worship. Would you ask others to be righteous and forget to practice it yourselves? Even though you read your Holy Book? Have you no sense? Seek Allah's help with patience and Salah; it is indeed hard to be punctual in offering Salah except for those who fear Allah, who are certain in their mind that they are going to meet their Rabb and that they are going to return to Him for final judgment.	जो अहद तुम्हारे साथ था उसे मैं पूरा करूँ, और मुझ ही से तुम डरो	और मैंने जो किताब भेजी है उसपर ईमान लाओ	यह उस किताब की ताईद में है जो तुम्हारे पास पहले से मौजूद थी, लिहाज़ा सबसे पहले तुम ही उसके मुनकिर न बन जाओ	थोड़ी क़ीमत पर मेरी आयात को न बेच डालो — और मेरे ग़ज़ब से बचो	बातिल का रंग चढ़ाकर हक़ को मुश्तबह न बनाओ और न जानते-बुझते हक़ को छिपाने की कोशिश करो	नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, और जो लोग मेरे आगे झुक रहे हैं उनके साथ तुम भी झुक जाओ	तुम दूसरों को तो नेकी का रास्ता इख़्तियार करने के लिए कहते हो, मगर अपने आपको भूल जाते हो? हालाँकि तुम किताब की तिलावत करते हो	क्या तुम अक्ल से बिल्कुल ही काम नहीं लेते? सब्र और नमाज़ से मदद लो, बेशक नमाज़ एक सख्त मुश्किल काम है, मगर उन फारमाँबरदार बन्दों के लिए मुश्किल नहीं है जो समझते हैं कि आख़िरकार उन्हें अपने रब से मिलना और उसी की तरफ़ पलटकर जाना है	

Tafsir